PRACTICES	HY.CUCUMBER (SISCO MARINO SUPER)														
Field Sanitation	Remove residues of previous crops, weeds, old vines and diseased/damaged plant material before sowing. Keep the boundries of field clean to reduce pest and disease carry-over.	**खेत की सफाई**	बुवाई से पहले पिछली फसल के अवशेष, खरपतवार, पुरानी बेलें और रोगग्रस्त/क्षतिग्रस्त पौधों को हटा दें। कीटों और रोगों के प्रसार को कम करने के लिए खेत की सीमाओं को साफ रखें।	**पौधशाला प्रबन्धन**	नर्सरी पौधों पालना चाहिए। पौधशाला को कीटरोधी, फफूंदी, पूनी पैथ्य अन्य रोगकारकों/विषाणु रोगों की सफाई हुई हो। पौधों और रोगों के प्रसार को कम करने के लिए खेत की सीमाओं को साफ रखें।	**पौध रोपण**	पौधों को रोपाई से पहले 10 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर डुबोना चाहिए।	**खेत तैयारी**	बुवाई से पहले खेत की गहरी जुताई करें। अच्छी जल निकासी सुनिश्चित करें। मिट्टी को भुरभुरा बनाने के लिए 2-3 बार जोताई करें।	**Alp Devanagri**	विशुद्ध नस्ल देसाई। जैव गैसका प्रयोग करने वाला कम्पोस्ट।	**मिट्टी की सेहत**	मिट्टी की सेहत बनाने के लिए हरी खाद (ढैंचा, मूंग) का उपयोग करें।
Soil requirement	Sandy loam to loam soil, well-drained, fertile, with good organic matter. Ideal pH range: around 6.0-7.0. Avoid waterlogging, as Cucumber is sensitive to excess moisture.	**मिट्टी की आवश्यकता**	बलुई दोमट से दोमट मिट्टी, अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ और पर्याप्त जैविक पदार्थ युक्त। आदर्श पीएच सीमा: लगभग 6.0-7.0। जलभराव से बचें, क्योंकि खीरा अधिक नमी के प्रति संवेदनशील होता है।	**नर्सरी प्रबंधन**	रेतला लोमी लोम भूमीन, बड़ी रिटी पानी निकासी, प्रांड्रुत, खरा कार्बनिक पदार्थवाली, पहले पी.एच-केड़ी. (लगभग 6.0-7.0) पानी कटाव नुकसानी करें, क्रड़ 8 क्रमेंटी गुड़ पौधा रोग फूनी कोरेन्सीस होता है।	**पौधरोपण**	पौधों को रोपाई से पहले 10 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर डुबोना चाहिए।	**खेत तैयारी**	गहरी जुताई करें। अच्छी जल निकासी सुनिश्चित करें। मिट्टी को भुरभुरा बनाने के लिए 2-3 बार जोताई करें।	**Vasishtha**	बीज उत्पादन।	**जैव उर्वरक**	जैव उर्वरक का प्रयोग करें।
Soil Testing	Conduct soil testing at least once every 2-3 years for EC, pH, OC, and macro-micro nutrients, and apply fertilizers based on test results.	**मृदा परीक्षण**	मिट्टी की ईसी, पीएच, ओईसी और सूक्ष्म-स्थूल पोषक तत्वों की जांच कम से कम हर 2-3 साल में एक बार करें और और उर्वरक परीक्षण के आधार पर उर्वरक डालें।	**मृदा परीक्षण**	EC, pH, OC नमूने निकाल एकदा EC, pH, OC आदि स्थूल-सूक्ष्म पोषक तत्वाओं मृदी परीक्षण करा आदि परीक्षणाधार फिरनाशुरूक डाले सारणी करनु हुई।	**मृदा परीक्षण**	दर २-३ वर्षों में एक बार मृदा परीक्षण करें।	**Mahi Pushkar**	कार्बनिक/ वानस्पतिक पदार्थ ऐसेटोलिया: ऊर्वरक 25 – 35 °C.	**मृदा परीक्षण**	EC, pH, OC आदि स्थूल-सूक्ष्म पोषक तत्वाओं मृदी परीक्षण करा आदि परीक्षणाधार फिरनाशुरूक डाले करना।
Climate Suitability	Climate / Weather Requirement: Temperature: Optimum 25 – 35 °C. Rainfall: 120-150 mm is suitable for the crop. Sowing temperature: 22-38 °C	**जलवायु उपयुक्तता**	जलवायु/मौसम की संबंधी आवश्यकताएँ: तापमान: 25-35 डिग्री सेल्सियस इष्टतम। वर्षा: लगभग 8 मिमी 120-150 मिमी उपयुक्त है। बुवाई का तापमान: 22-30 डिग्री सेल्सियस।	**पौधरोपण दीपाल**	पौधरोपण तापमान: २०-३४°C.	**इष्टतम अनुकूलता**	पौधरोपण तापमान: २०-३४°C.	**ऊष्णतीलता पोषणुकूलता**	हवामानसारी आवश्यकता: तापमान: आदर्श २५ – ३५°C. पाऊस: निसरासारी १२०-१५० मिमी पाऊसमान योग्य आहे. पेरणीसारी तापमान: २२-३४°C.	**तापमानाचा आवश्यकता**	बीजोत्पादन: ऊर्वरक 25 – 35 °C.	**तापमान आवश्यकता**	बीजोत्पादन: 22-30 °C
Land preparation	Land Preparation: Undertake 3-4 ploughings and harrowings to achieve fine tilth. Incorporate well-decomposed FYM (farmyard manure) when preparing the land.	**भूमि की तैयारी**	भूमि की तैयारी: अच्छी तरह से उपजाऊ बनाने के लिए 3-4 बार जुताई और हैरोइंग करें। भूमि तैयार करते समय अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद (फार्मयार्ड मिनाउर)	**भूमिकी तैयारी**	जमिनीची मशागत: जमीन भुरभुरीत होण्यासाठी ३-४ वेळा नांगरणी आणि कुळवणी करा. जमीन तयार करताना चांगले कुजलेले शेणखत जमिनीत मिसळा.	**जमीन तयारी**	जमीन तयार करने से पहले अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाएं।	**जमीन तयारी**	जमीन तैयार करने से पहले अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाएं।	**जमीन प्रतिरोधकता**	हवामानसारी आवश्यकता: तापमान: आदर्श २५ – ३५°C. पाऊस: निसरासारी १२०-१५० मिमी पाऊसमान योग्य आहे.	**जमीन तयारी**	जमीन तैयार करने से पहले अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाएं।
Sowing Time	Sowing Time / Season: Sowing is recommended in February-March for early crops. In low-tanned or protected cultivation, December sowing may be used for early yield.	**बुवाई का समय**	बुवाई का समय/मौसम: जल्दी पकने वाली फसलों के लिए फरवरी-मार्च में बुवाई की सलाह दी जाती है। कम टेनड़ वाले तरीकों या संरक्षित खेती में, जल्दी उपज के लिए दिसंबर में बुवाई की जा सकती है।	**बुवाई का समय**	बोवणी वेळ / ऋतू: पहले पाऊ बहुत फेब्रुवारी-मार्चमध्ये पाण्याची उपलब्धी उपलब्ध करावी करावी. कमी टेनटा प्रकारच संरक्षित पीकेमध्ये, डिसेम्बर पाण्यामध्ये पिकांदेत पहिल्या पिकाच्या बुवाई करावी लागे.	**पेरणीची वेळ**	पेरणीची वेळ: फेब्रुवारी-मार्च.	**बीजारोपण समय**	बीजारोपण समय: २५ – ३५°C.	**बीजारोपण समय**	बीजारोपण समय: २५ – ३५°C.
Seed rate & Spacing	Spacing / Seed Rate / Sowing Method: Spacing: Beds of width 2.5 m, seeds sown at 60 cm spacing between plants on beds. Seed rate: Approx. 1.9 kg per acre. Sowing depth: 2-3 cm.	**बीज दर और दूरी**	बुवाई की विधि/बीज दर/दूरियां हैं: 2.5 मीटर चौड़ाई वाली क्यारियाँ; क्यारियों में पौधों के बीच 60 सेंटीमीटर की दूरी पर बीज बोए जाते हैं। बीज दर: लगभग 1.9 किलोग्राम प्रति एकड़। बुवाई की गहराई: 2-3 सेंटीमीटर।	**बीज दर आणि पेरणी**	बेत / बीज दर / पेरणी पद्धत: बेत: 2.5 मीटर रुंदीचे वाफे; वाफ्यावर पेरणारने 60 सेंटी अंतराने बिया पेरावे. बियाणे दर: अंदाजे 1.9 किलो प्रति एकर. पेरणीची खोली: 2-3 सेंटी.	**बीजारोपण दूरी**	बीज दर: अंदाजे 1.9 किलो प्रति एकड़। बीजारोपण गहराई: 2-3 सेंटीमीटर।	**बीजारोपण विधि**	बीज दर: अंदाजे 1.9 किलो प्रति एकड़। बीजारोपण गहराई: 2-3 सेंटीमीटर।	**Dipti Sitaram**	बीज उत्पादन।	**बीज दर**	बीज दर: लगभग 1.9 किलोग्राम प्रति एकड़।
Seed Treatment	Seed Treatment: Treat seeds before sowing (e.g., with suitable chemical such as Captan @ 2 gm per kg seed) to protect against seed-borne diseases.	**बीज उपचार**	बीज उपचार: बीज जनित रोगों से बचाव के लिए बुवाई से पहले बीजों का उपचार करें (उदाहरण के लिए, कैप्टन जैसे उपयुक्त रसायन का प्रयोग करें, यदि सिफारिश बीज के 2 ग्राम की दर से)।	**बीज प्रक्रिया**	बीज प्रक्रिया: बीजांच्या रोगांपासून बचाव करण्यासाठी पेरणीपूर्वी बियाणांवर प्रक्रिया करा (उदा., कॅप्टनसारख्या रसायन का प्रयोग करा @ २ ग्रॅम प्रति किलो बीज वापरून).	**बीज उपचार**	बीज उपचार: बीजांच्या रोगांपासून बचाव करण्यासाठी पेरणीपूर्वी बियाणांवर प्रक्रिया करा (उदा., कॅप्टनसारख्या रसायन का प्रयोग करा @ २ ग्रॅम प्रति किलो बियाणे).	**बीज उपचार**	बीज उपचार: बीजांच्या रोगांपासून बचाव करण्यासाठी पेरणीपूर्वी बियाणांवर प्रक्रिया करा (उदा., कॅप्टनसारख्या रसायन का प्रयोग करा @ २ ग्रॅम प्रति किलो बियाणे).	**Dipti Vaij**	बीज उत्पादन।	**बीज उपचार**	बीज उपचार: बीजांच्या रोगांपासून बचाव करण्यासाठी पेरणीपूर्वी बियाणांवर प्रक्रिया करा (उदा., कॅप्टनसारख्या रसायन का प्रयोग करा @ २ ग्रॅम प्रति किलो बियाणे).
Weed Management	Fertilizer / Nutrient Management: Basal dose per acre: Urea 98 kg, SSP 125 kg, MOP 35 kg (equivalent to N 40 kg, P 20 kg, K 20 kg). Application: At land preparation apply basal; at sowing apply one third of nitrogen + full P & K; remaining N at vine growth stage.	**उर्वरक/पोषक तत्व प्रबंधन**	उर्वरक/पोषक तत्वों का प्रबंधन: प्रति एकड़ आधारभूत खुराक: यूरिया 98 किग्रा, एसएसपी 125 किग्रा, एमओपी 35 किग्रा. (जो लगभग N 40 किग्रा, P 20 किग्रा, K 20 किग्रा के बराबर है)। प्रयोग: जोत तैयार करते समय आधारभूत खुराक डालें; बुवाई के समय नाइट्रोजन का एक तिहाई भाग + फास्फोरस और पोटाशियम की पूरी मात्रा डालें, बेल नाइट्रोजन के बाकी हिस्से का वृद्धि अवस्था में डालें।	**खतपतवार प्रबंधन**	नीदाच व्यवस्थापन.	**खरपतवार नियंत्रण**	खरपतवार नियंत्रण: हाथ से निराई-गुड़ाई और रासायनिक नियंत्रण का प्रयोग करें। उदाहरण: गैप लगाकर खरपतवारों के लिए 150 लीटर पानी में 1.6 लीटर रासायनिक का प्रयोग करें।	**खर पतवारनाश**	नीदाच व्यवस्थापन.	**खर पतवारनाश**	नीदाच व्यवस्थापन.	**खर पतवारनाश**	खरपतवार नियंत्रण: हाथ से निराई-गुड़ाई और रासायनिक नियंत्रण का प्रयोग करें। उदाहरण: गैप लगाकर खरपतवारों के लिए 150 लीटर पानी में 1.6 लीटर रासायनिक का प्रयोग करें।	**Jitendra Dhanjya**	बीज उत्पादन।	**खरपतवार नियंत्रण**	खरपतवार नियंत्रण: हाथ से निराई-गुड़ाई और रासायनिक नियंत्रण का प्रयोग करें। उदाहरण: गैप लगाकर खरपतवारों के लिए 150 लीटर पानी में 1.6 लीटर रासायनिक का प्रयोग करें।
Irrigation Management	Irrigation: Frequent irrigation is required in summer, approx. 10-12 irrigations during the crop cycle. First irrigation pre-sowing, then every 2-3 days initially, later every 4-5 days. Drip irrigation is advantageous. Apni Kheti	**सिंचाई प्रबंधन**	सिंचाई: गर्मियों में बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है; फसल चक्र के दौरान लगभग 10-12 बार सिंचाई। पहली सिंचाई बुवाई से पहले; फिर शुरुआत में हर 2-3 दिन में, बाद में हर 4-5 दिन में। ड्रिप सिंचाई लाभदायक है। अपनी खेती	**सिंचाई व्यवस्थापन**	सिंचाई: उन्हाळ्यात वारंवार सिंचाई गरजेची आहे; पीक चक्रादरम्यान अंदाजे १०-१२ सिंचाई. पहिली सिंचाई पेरणीपूर्वी, त्यानंतर सुरुवातीला हर २-३ दिवसांनी आणि नंतर हर ४-५ दिवसांनी करावी. ठिबक सिंचन फायदेशीर ठरते. अपनी खेती	**सिंचन नियमन**	सिंचन: उन्हाळ्यात वारंवार सिंचनाची आवश्यकता असते; पीक चक्रात अंदाजे १०-१२ वेळा सिंचन करावे लागते. पहिले सिंचन पेरणीपूर्वी, त्यानंतर सुरुवातीला हर २-३ दिवसांनी आणि नंतर हर ४-५ दिवसांनी करावे. ठिबक सिंचन फायदेशीर ठरते. अपनी खेती	**सिंचाई प्रबंधन**	सिंचाई: गर्मियों में बार-बार सिंचाई की आवश्यकता होती है; फसल चक्र के दौरान लगभग 10-12 बार सिंचाई। पहली सिंचाई बुवाई से पहले; फिर शुरुआत में हर 2-3 दिन में, बाद में हर 4-5 दिन में। ड्रिप सिंचाई प्रभावशाली है। अपनी खेती	**सिंचाई व्यवस्थापन**	सिंचाई: उन्हाळ्यात वारंवार सिंचाई गरजेची आहे; पीक चक्रादरम्यान अंदाजे १०-१२ वेळा सिंचन करावे लागते. पहिली सिंचाई पेरणीपूर्वी, त्यानंतर सुरुवातीला हर २-३ दिवसांनी आणि नंतर हर ४-५ दिवसांनी करावे. ठिबक सिंचन फायदेशीर ठरते. अपनी खेती	**सिंचाई प्रबंधन**	सिंचाई: उन्हाळ्यात वारंवार सिंचाई गरजेची आहे; पीक चक्रादरम्यान अंदाजे १०-१२ वेळा सिंचन करावे लागते. पहिली सिंचाई पेरणीपूर्वी, त्यानंतर सुरुवातीला हर २-३ दिवसांनी आणि नंतर हर ४-५ दिवसांनी करावे. ठिबक सिंचन फायदेशीर ठरते. अपनी खेती	**Jitendra Dhanjya**	बीज उत्पादन।	**सिंचाई प्रबंधन**	सिंचाई: उन्हाळ्यात वारंवार सिंचाई गरजेची आहे; पीक चक्रादरम्यान अंदाजे १०-१२ वेळा सिंचन करावे लागते. पहिली सिंचाई पेरणीपूर्वी, त्यानंतर सुरुवातीला हर २-३ दिवसांनी आणि नंतर हर ४-५ दिवसांनी करावे. ठिबक सिंचन फायदेशीर ठरते. अपनी खेती
Pest Management	Pest Management: Fruit flies, aphids common pests. Neem oil (@3% commonly recommended; practice crop hygiene.	**कीट प्रबंधन**	कीट प्रबंधन: फल मक्खियों और एफिड्स आम कीट हैं। 3% नीम का तेल आमतौर पर अनुशंसित है; फसल की स्वच्छता का पालन करें।	**पूर्वरक्षा व्यवस्थापन**	पूर्वरक्षा व्यवस्थापन: फळमाशी, मोठ्ठा सामान्य फुलांत हो. लीमअनु तेल @३% सामान्य रीति वापरावा हाच्चाच करावे हे; चांगली स्वच्छतेचे पालन करा.	**पीक संरक्षण**	पीक व्यवस्थापन: फळमाशी, माश या सामान्य कीड आहेत. सामान्यपणे ३% कडुलिंबाचा तेलाची शिफारस केली जाते, शेतकऱ्यांना स्वच्छतेचे पालन करा.	**पूर्वरक्षा**	पूर्वरक्षा व्यवस्थापन: फळमाशी, माश या सामान्य कीड आहेत. सामान्यपणे ३% कडुलिंबाचा तेलाची शिफारस केली जाते, शेतकऱ्यांना स्वच्छतेचे पालन करा.	**Ankur Dabhade**	बीज उत्पादन।	**कीट प्रबंधन**	पूर्वरक्षा व्यवस्थापन: फळमाशी, माश या सामान्य कीड आहेत. सामान्यपणे ३% कडुलिंबाचा तेलाची शिफारस केली जाते, शेतकऱ्यांना स्वच्छतेचे पालन करा.
Disease Management	Disease Management: Powdery mildew managed with fungicidal sprays (carbendazim etc.); mosaic and other foliar diseases controlled via appropriate sprays and sanitation.	**रोग प्रबंधन**	रोग प्रबंधन: पाउडरी फफूंद रसायनिक स्प्रे (कार्बेन्डाजिम आदि); इलाज पत्तियों मिलकर; का मोजेक, मोजेक और अन्य पत्ते रोगों का नियंत्रण उपयुक्त स्प्रे और स्वच्छता के अभ्यास के जरिए किया जाता है।	**रोग व्यवस्थापन**	रोग व्यवस्थापन: बुरशी भुरकटाचा प्रादुर्भाव (कार्बेन्डाजीम वगैरे); बाग मिसळीत वापरा हे; मोजेक किंवा मोजेक पाने आणि इतर पानावरील रोगांवर योग्य फवारणी आणि स्वच्छतेद्वारे नियंत्रण केले जाते.	**रोग प्रबंधन**	रोग व्यवस्थापन: बुरशी भुरकटाचा प्रादुर्भाव (कार्बेन्डाजिम आदि); इलाज पत्तियों मिलकर; का मोजेक, मोजेक और अन्य पत्ते रोगों का नियंत्रण उपयुक्त स्प्रे और स्वच्छता के अभ्यास के जरिए किया जाता है।	**Ganesh Chaudhari**	बीज उत्पादन।	**रोग प्रबंधन**	रोग व्यवस्थापन: बुरशी भुरकटाचा प्रादुर्भाव (कार्बेन्डाजिम आदि); इलाज पत्तियों मिलकर; का मोजेक, मोजेक और अन्य पत्ते रोगों का नियंत्रण उपयुक्त स्प्रे और स्वच्छता के अभ्यास के जरिए किया जाता है।
Harvesting & Yield	Harvesting / Yield: The crop starts yielding about 45-50 days after sowing. Apni Khati Typically 10-12 pickings are done. Yield: ~33-42 qt/acre.	**फसल कब है तब का प्रबंधन और पैदावार**	कटाई/उपज: बुवाई के लगभग 45-50 दिन बाद फसल से उपज शुरू हो जाती है। अपनी खेती: आमतौर पर 10-12 बार तुड़ाई की जाती है। उपज: लगभग 33-42 क्विंटल प्रति एकड़।	**कापणी व उत्पन्न**	कापणी / उत्पन्न: पेरणीनंतर सुमारे ४५-५० दिवसांनी पिकाला उत्पन्न सिद्ध लागते. आपली शेती: साधारणपणे १०-१२ वेळा तोडणी केली जाते. उत्पन्न: ~३३-४२ क्विंटल/एकर.	**कापणी व उत्पन्न**	कापणी / उत्पन्न: पेरणीनंतर सुमारे ४५-५० दिवसांनी पिकाला उत्पन्न सिद्ध लागते. आपली शेती: साधारणपणे १०-१२ वेळा तोडणी केली जाते. उत्पन्न: ~३३-४२ क्विंटल/एकर.	**Ganesh Chaudhari**	बीज उत्पादन।	**कापणी व उत्पन्न**	कापणी / उत्पन्न: पेरणीनंतर सुमारे ४५-५० दिवसांनी पिकाला उत्पन्न सिद्ध लागते. आपली शेती: साधारणपणे १०-१२ वेळा तोडणी केली जाते. उत्पन्न: ~३३-४२ क्विंटल/एकर.
Post-Harvest Management & Storage	Post-Harvest & Handling: Harvest fruits when young & green, using sharp tool to avoid damage. Handle carefully, sort/grading for market. (Note: detailed post-harvest handling may need to be adapted locally.)	**कटाई के बाद और भंडारण**	कटाई के बाद और भंडारण: फलों को कटाया और हुए होने पर ही तोड़ें, कोमल से बचने के लिए तेज औजारों का प्रयोग करें। आगामी/सुरक्षित संभाले, बाजार के लिए छांटें/श्रेणी बनाएं। (नोट: कटाई के बाद के विस्तृत रखरखाव में स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार बदलाव की आवश्यकता हो सकती है।)	**काढणी पश्चात व्यवस्थापन**	काढणी पश्चात व्यवस्थापन: फळांची काढणी करा जेव्हा ते कोवळे आणि हिरवे असतात. हाताळताना काळजी घ्या. साठवणीसाठी/विक्रीसाठी वर्गीकरण करा. (टीप: काढणीनंतरच्या सविस्तर हाताळणीमध्ये स्थानिक परिस्थितीनुसार बदल करण्याची आवश्यकता असू शकते.)	**काढणीनंतर व्यवस्थापन आणि साठवणूक**	काढणीनंतर व्यवस्थापन आणि साठवणूक: फळांची काढणी करा जेव्हा ते कोवळे आणि हिरवे असतात. हाताळताना काळजी घ्या. साठवणीसाठी/विक्रीसाठी वर्गीकरण करा. (टीप: काढणीनंतरच्या सविस्तर हाताळणीमध्ये स्थानिक परिस्थितीनुसार बदल करण्याची आवश्यकता असू शकते.)	**Ganesh Chaudhari**	बीज उत्पादन।	**काढणी व उत्पन्न**	काढणी व उत्पन्न: पेरणीनंतर सुमारे ४५-५० दिवसांनी पिकाला उत्पन्न सिद्ध लागते. आपली शेती: साधारणपणे १०-१२ वेळा तोडणी केली जाते. उत्पन्न: ~३३-४२ क्विंटल/एकर.	**Ganesh Chaudhari**	बीज उत्पादन।	**काढणी व उत्पन्न**	काढणी व उत्पन्न: पेरणीनंतर सुमारे ४५-५० दिवसांनी पिकाला उत्पन्न सिद्ध लागते. आपली शेती: साधारणपणे १०-१२ वेळा तोडणी केली जाते. उत्पन्न: ~३३-४२ क्विंटल/एकर.
Disclaimer	The recommendations are based on SAUs, government agencies, and trial centers. Actual results may vary depending on soil type, climate, variety, and crop management practices.	**अस्वीकरण**	ये सिफारिशें एसएयू, सरकारी एजेंसियों और परीक्षण केंद्रों पर आधारित हैं। वास्तविक परिणाम मिट्टी के प्रकार, जलवायु, किस्म और फसल प्रबंधन पद्धतियों के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।	**नकारीकरण**	नकारीकरण: सीएयू, सरकारी संस्थाओं आणि प्रायोगिक केंद्रांवर आधारित आहेत. वास्तव परिणाम जमीनीचा प्रकार, हवामान, वाण आणि पीक व्यवस्थापन पद्धतींच्या आधारे बदलू शकतात.	**अस्वीकरण**	या शिफारशी एसएयू, सरकारी संस्था आणि चाचणी केंद्रांवर आधारित आहेत. वास्तव परिणाम जमीनीचा प्रकार, हवामान, वाण आणि पीक व्यवस्थापन पद्धतींच्या आधारे बदलू शकतात.	**अस्वीकरण**	ये सिफारिशें एसएयू, सरकारी संस्था और चाचणी केंद्रों पर आधारित हैं। वास्तविक परिणाम मिट्टी के प्रकार, जलवायु, किस्म और फसल प्रबंधन पद्धतियों के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।	**अस्वीकरण**